9 चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती

त्रिलोचन

(जन्म : सन् 1917, मृत्यु : सन् 2007)

प्रगतिशील काव्यधारा के कवि त्रिलोचन का जन्म चिरानीपट्टी, कटघरापट्टी, जिला-सुल्तानपुर (उ.प्र.) में हुआ था। उनका मूल नाम वासुदेव सिंह था। उन्होंने काशी विश्वविद्यालय से एम. ए. (अंग्रेजी) की एवं लाहौर से संस्कृत की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने उर्दू-हिन्दी कोश का संपादन किया था।

'गुलाब और बुलबुल', 'उस जनपद का कवि हूँ', 'ताप के ताये हुए दिन' आदि उनके चर्चित कवितासंग्रह हैं। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, शलाका सम्मान आदि मैथिलीशरण गुप्त सम्मान आदि से सम्मानित किया गया हैं।

यहाँ संकलित कविता 'चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' में गाँव की अनपढ लड़कियों और सामान्य-जन को नायकत्व प्रदान किया गया है। इस कविता में चम्पा की मनोभावना एवं जीवन पद्धति के प्रामाणिक चित्र हैं। चम्पा छोटी और नटखट लड़की है कवि उसे पढ़ने के लिए प्रेरित करता है। उसने शिक्षा की अहमियत को समझ लिया है। चम्पा के माध्यम से कवि ने गाँवों की तमाम स्त्रियों की मनोव्यथा का निरूपण किया है। जिनके पति पत्नियों को छोड़कर अर्थोपार्जन के लिए परदेश चले जाते हैं, अनपढ़ होने के कारण वे स्वयं ही चिट्ठी-पत्री लिखकर उनके पास भेज नहीं सकतीं। यह कविता स्त्री-शिक्षा पर भी भार देती हैं। चम्पा सिर्फ चंपा नहीं हैं यह आज की समग्र ग्रामीण नारी-चेतना का प्रतीक है।

चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती
मैं जब पढ़ने लगता हूँ वह आ जाती है
खड़ी खड़ी चुपचाप सुना करती है
उसे बड़ा अचरज होता है :
इन काले चीन्हों से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं

चम्पा सुन्दर की लड़की है
सुन्दर ग्वाला हैं : गायें-भैंसें रखता है
चम्पा चौपायों को लेकर
चरवाही करने जाती है
चम्पा अच्छी है
चंचल है
न ट ख ट भी है

कभी-कभी ऊधम करती है
कभी-कभी वह कलम छिपा देती है
जैस-तैसे उसे ढूँढ़ कर जब लाता हूँ
पाता हूँ-अब काग़ज गयब
परेशान फिर हो जाता हूँ

चम्पा कहती है :
तुम कागद ही गोदा करते हो दिन भर
क्या यह काम बहुत अच्छा है
यह सुन कर मैं हँस देता हूँ
फिर चम्पा चुप हो जाती है
उस दिन चम्पा आई, मैंने कहा कि
चम्पा, तुम भी पढ़ लो
हारे गाढ़े काम सरेगा

गाँधी बाबा की इच्छा है–
सब जन पढ़ना–लिखना सीखें
चम्पा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढूँगी
तुम तो कहते थे गाँधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढूँगी

मैने कहा कि चंपा, पढ़ लेना अच्छा है
ब्याह तुम्हारा होगा, तुम गौने जाओगी,
कुछ दिन बालम संग साथ रह चला जाएगा जब कलकत्ता
बड़ी दूर है वह कलकत्ता
कैसे उसे सँदेसा दोगी
कैसे उसके पत्र पढ़ोगी
चम्पा पढ़ लेना अच्छा है!

चम्पा बोली : तुम कितने झूठे हो, देखा,
हाय राम, तुम पढ़–लिख कर इतने झूठे हो
मैं तो ब्याह कभी न करूँगी
और कहीं जो ब्याह हो गया
तो मै अपने बालम को संग साथ रखूँगी
कलकत्ता में कभी न जाने दूँगी
कलकत्ते पर बजर गिरे।

शब्दार्थ– टिप्पणी

अच्छर अक्षर **अचरज** आश्चर्य, विस्मय, **चौपायों** चार पैरोंवाले पशु (गाय, भैंस, बैल) **ऊधम** बखेड़ा **गोदना** लिखना **गौना** विवाह के पश्चात् लड़की की दूसरी बिदाई, **बजर** वज्र

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(1) चम्पा अपने बालम को कहाँ रखना जाहती है ?

(क) कलकत्ता में (ख) अपने संग साथ में (ग) परदेश में (घ) विदेश में

(2) चम्पा लेखक की कौन-सी चीज़ छिपा देती है ?

(क) पॉकेट (ख) कलम (ग) किताब (घ) चश्मा

(3) 'सब जन पढ़ना-लिखना सीखें' ऐसी इच्छा किसकी है ?

(क) चंपाकी (ख) गांधीजी की (ग) गाँव वालों की (घ) शहर वालों की

(4) गाँव के विवाहित युवक कलकात्ता क्यों जाते हैं ?

(क) घूमने (ख) पढ़ने (ग) कमाने (घ) खेलने

(5) कवि चम्पा को क्या करने के लिए प्रेरित करता है ?

(क) खेलने (ख) पढ़ने (ग) गाने (घ) नाचने

2. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए :

(1) चम्पा कवि के पास किस समय आती है ?

(2) चम्पा चौंपायों को लेकर क्या करने जाती है ?

(3) चम्पा कहाँ पर वज्र गिरने की बात करती है ?

3. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में दीजिए :

(1) कवि ने चम्पा को पढ़ने के लिए कहा तो उसने क्या जवाब दिया ?

(2) चम्पा कवि से ऐसा क्यों कहती है कि तुम पढ़-लिखकर झूठे हो ?

(3) चम्पा के कागद गोदने के आरोप का कवि क्या जवाब देता है ?

4. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पाँच से छः पंक्तियों में लिखिए :

(1) चम्पा कैसे-कैसे ऊधम करती है ?

(2) काले अच्छर को देखकर चम्पा को अचरज क्यों होता है ?

(3) चम्पा कलकत्ते पर बजर गिरे ऐसा क्यों कहती है ?

(4) गाँधी बाबा की इच्छा है - 'सब जन पढ़ना-लिखना सीखें' इस पंक्ति का भावार्थ समझाइए।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- 'निराला' की तोड़ती पत्थर कविता प्राप्त कर पढ़ें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'साक्षारता अभियान' पर बच्चों को निबंध लिखवाइए।